E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(2): 148-151
Received: 02-02-2021
Accepted: 06-03-2021

श्वेता सिंह
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. एस.के. त्रिपाठी
सहा.प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
श्वेता सिंह
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कर्त्तव्य सन्तुष्टता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

श्वेता सिंह एवं डॉ. एस.के. त्रिपाठी

सारांश
प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य ''प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कर्त्तव्य सन्तुष्टता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' को प्राप्त करने के लिए सीधी विकासखण्ड के चार शहरी एवं चार ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित प्राथमिक विद्यालय के 80 विद्यार्थियों का चयन (10–10) दैव न्यादर्श पद्धति से किया गया है। शोध अध्ययन हेत कर्तव्य सन्तुष्टता के मापन के लिए डॉ. (श्रीमती) नसरीन एवं डॉ. (श्रीमती) अफसान अनीस का शिक्षक कार्य सन्तुष्टि परीक्षण व शैक्षिक उपलब्धि हेतु स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पत्रक का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की कर्त्तव्य संतुष्टता का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर हैं। प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों का कर्त्तव्य सन्तुष्टता का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्यशब्दः क्रियाकलाप, परम्परागत, शिक्षण पद्धति, उपलब्धि स्तर, प्रभाव

प्रस्तावना
शिक्षा शब्द से यह प्रकट होता है कि यह प्रक्रिया अपने आप में बड़ी व्यापक है। जन्म से मृत्युपर्यन्त हम अनेक वस्तुओं, व्यक्तियों, संस्थाओं एवं विचारों के सम्पर्क में आते हैं। हम प्रशिक्षण नवीन अनुभव प्राप्त करते हैं। इन अनुभवों एवं संस्कारों से हमारे व्यवहार में परिवर्तन आता है। ये अनुभव बड़े विस्तृत पैमाने पर हमारे सामने आते हैं। इन अनुभवों को प्राप्त करने की प्रक्रिया शिक्षा ही है। अतः शिक्षा का अर्थ बड़ा व्यापक है। इस व्यापक अर्थ में हम भ्रमण, विवाहोत्सव, सामाजिक संगठन, मेले आदि से जो अनुभव प्राप्त करते हैं वे सभी शिक्षा के अन्तर्गत हैं। इस व्यापक अर्थ में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षार्थी और शिक्षक हैं। राज्य अपने प्रचार एवं अपनी संस्थाओं द्वारा हमें शिक्षित करता है। धार्मिक आयोजनों में भाग लेकर हम कुछ–न–कुछ सीखते ही हैं। यात्रा के समय भी हमारी शिक्षा चलती रहती है।
किसी राष्ट्र को प्रगति पथ पर चलने के लिए और अपने देश की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक उन्नति करने के लिए शिक्षा आवश्यक है, इसके लिए शिक्षा का समुचित प्रसार आवश्यक है, क्योंकि यही राष्ट्र की सम्पन्नता की नीव है, एवं राष्ट्र की विभिन्न प्रकार की उन्नति का परिचायक है। राश्ट्र की उन्नति के लिए शिक्षा, जनशक्ति एवं आर्थिक प्रगति आवश्यक है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य अपने वातावरण एवं समाज में समायोजन करने का प्रयत्न करता है। मनुष्य समाज में अपना सामंजस्य स्थापित कर समाज का उपयोगी अंग बन जाता है। एवं समाज का कल्याण करने के योग्य हो जाता है। इसलिए शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य व्यवहार का परिमार्जन करना हैं
शिक्षकों की कर्त्तव्य संतुष्टता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर अत्यंत प्रभाव पड़ता है। उत्तम शैक्षिक उपलब्धि, उत्तम भावना का स्रोत है। शिक्षक जब अपने कर्त्तव्यों से संतुष्ट होता है तो इसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर होता है। शैक्षिक उपलब्धि का प्रयोग प्रायः सभी शिक्षा संस्थाओं में होता है।

पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण :
किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कर्त्तव्य सन्तुष्टता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – कौल लोकेश (1998)[1], मूज, आर. (1964)[2], थोर्प, एल.वी. और सैमुलर, ए.एम. (1965)[3], ओल्पोर्ट, जी.डब्ल्यू (1937)[4],

व खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य (1987)[5].

अध्ययन की आवश्यकता –

किसी भी संस्था का उद्देश्य प्राप्त भौतिक संसाधनों का उपयोग कर मानव (छात्र, छात्राएँ) प्रकृति में पाये जाने वाले विभिन्न गुणों का अधिकतम विकास करना होता है। विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कर्त्तव्य संतुष्टता का अध्ययन कर यह जानने का प्रयास किया जावेगा, कि कार्यरत शिक्षकों की कर्त्तव्य संन्तुष्टता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कितना सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य –

1. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कर्त्तव्य सन्तुष्टता का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की कर्त्तव्य सन्तुष्टता का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कर्त्तव्य सन्तुष्टता का अध्ययन करना।
4. प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
5. प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना –

एच 1. प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की कर्त्तव्य संतुष्टता का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं हैं।

एच 2. प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों का कर्त्तव्य सन्तुष्टता का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमाएँ–

1. शोध का क्षेत्र सीधी जिले के सीधी विकासखण्ड तक ही लिया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक स्तर तक के विद्यार्थियों तक ही सीमित रहेगा।
3. अध्ययन में मात्र कक्षा तीन से पॉचवी तक के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया हैं
4. अध्ययन की सुविधा हेतु मात्र 80 विद्यार्थियों को चुना गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सीधी विकासखण्ड के चार शहरी एवं चार ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन (10–10) दैव न्यादर्श पद्धति से किया गया है।

उपकरण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेत कर्तव्य सन्तुष्टता के मापन के लिए डॉ. (श्रीमती) नसरीन एवं डॉ. (श्रीमती) अफसान अनीस का शिक्षक कार्य सन्तुष्टि परीक्षण व शैक्षिक उपलब्धि हेतु स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पत्रक का प्रयोग किया गया।

विधि एवं योजना –

योजना के अंतर्गत निम्नांकित अनुसंधान योजना प्रस्तावित है – प्रस्तुत शेध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रस्तावित है। जिसमें प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कर्तव्य सन्तुष्टता एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया इसमें सीधी जिले के सीधी विकासखण्ड के अन्तर्गत 3–3 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थिति विद्यालयों को लिया गया है।

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि वर्णनात्मक अनुसंधान की मुख्य विधियों में से एक है। वर्णनात्मक अनुसंधान में शोध का संबंध वर्तमान से होता है। यह वर्तमान के तत्वों परिस्थितियों के संबंध में व्यक्तियों, वस्तुओं घटनाक्रमों आदि के विशय में प्रपत्र एकत्रित कर उनका विश्लेषण, विवेचन वर्गीकरण तथा मापन आदि का कार्य करता है।

सर्वेक्षण अनुसंधान का उपयोग मुख्य रूप से सामाजिक विज्ञानों में वर्तमान की किसी स्थिति, घटना से संबंधित होता है। इस विधि के अन्तर्गत न्यादर्ष चयन की प्रक्रिया को महत्व दिया जाता है। सूचना एकत्रित करने के कई माध्यम होते है जैसे प्रश्नावली, कथनावली, साक्षात्कार अवलोकन, अनूसूची आलेख एवं मूल्यांकन। सूचना एकत्रित होने के बाद तालिकाकरण एवं विश्लेषण किया जाता है।

इस प्रकार सर्वेक्षण अध्ययनों से स्पष्ट तथा निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति होती है। इन्हीं विशेषताओं के कारण प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण –

प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण एवं परिकल्पना की जांच हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट, सहसंबंध गुणांक की गणना की गयी है।

परिणाम एवं विश्लेषण

परिकल्पना क्रमांक –1 : "प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की कर्तव्य संतुष्टता का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं हैं।"

सारणी क्रमांक – 1 प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की कर्तव्य संतुष्टता का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्रमांक	समूह	N	M	SD	t-value
1.	ग्रामीण	40	34.6	6.3	2.11
2.	शहरी	40	38.4	10.0	

स्वतंत्रता के अंश 78 पर सार्थक

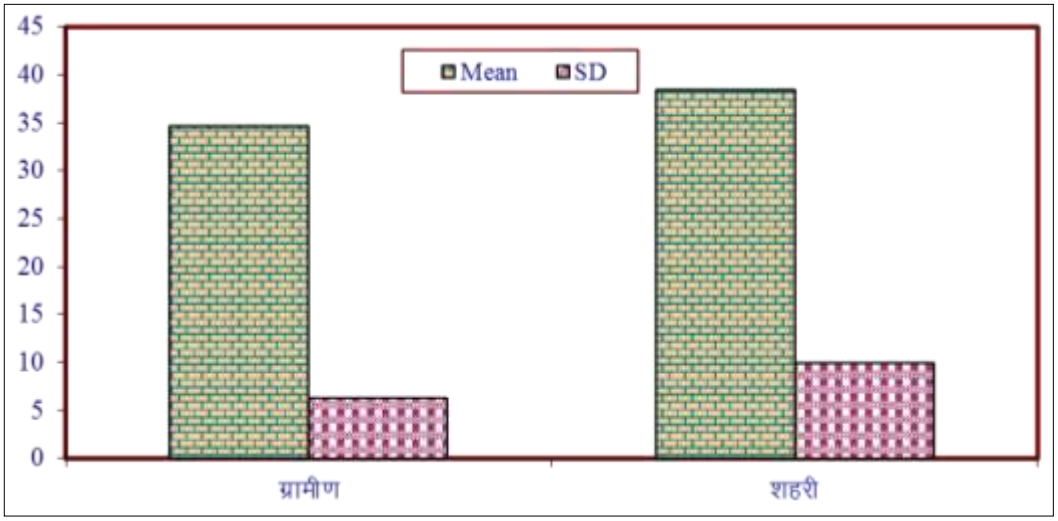

आरेख क्र. 1 : प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की कर्तव्य संतुष्टता का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की कर्तव्य सन्तुष्टता का छात्रों के प्राप्तांक का मध्यमान 34.6 एवं प्रमाणिक विचलन 6.3 है। इस प्रकार प्राथमिक विद्यालयों के शहरी क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की कर्तव्य सन्तुष्टता का छात्रों के प्राप्तांक का माध्यमान 38.4 एवं प्रमाणिक विचलन 10.0 है। तथा प्राप्त 't' का मूल्य 2.11 है। इस प्रकार गणना से प्राप्त 't' का मान 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' के सारणी मूल्य 1.99 से अधिक है। अर्थात् अन्तर सार्थक है। अतः परिकल्पना असत्य होती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की कर्तव्य सन्तुष्टता का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना क्रमांक 2 : "प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों का कर्तव्य सन्तुष्टता का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 2 : प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों का कर्तव्य सन्तुष्टता का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्रमांक	समूह	N	M	SD	df	t-value
1.	पुरुष	40	35.1	7.0	78	1.72
2.	महिला	40	38.8	10.2		

स्वतंत्रता के अंश 78 पर सार्थक

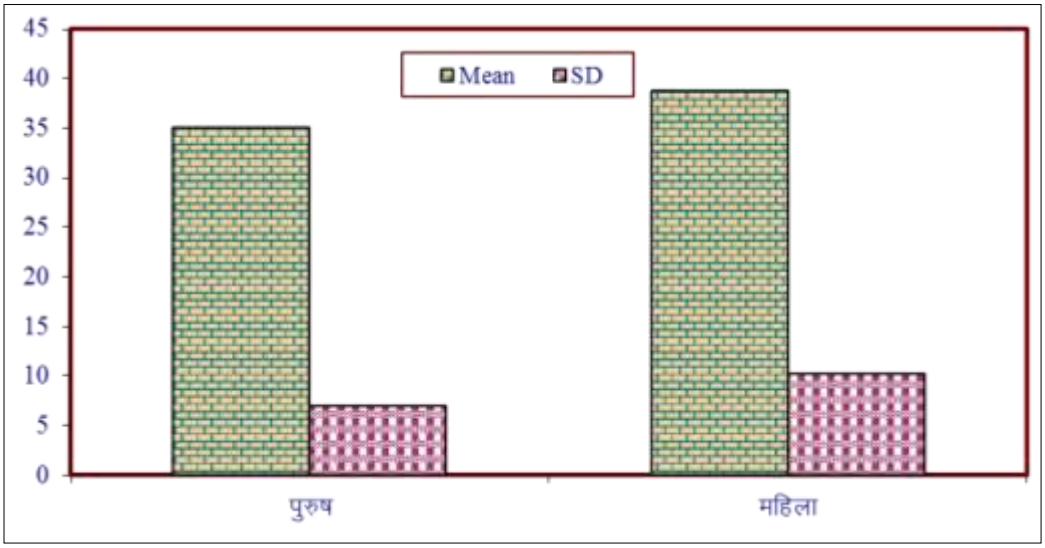

आरेख क्र. 2 : प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों का कर्तव्य सन्तुष्टता का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 2 से स्पष्ट है, कि प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों का कर्त्तव्य संतुष्टता का छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान 35.1 एवं प्रमाणिक विचलन 7.0 है इसी प्रकार प्राथमिक विद्यालयों के महिला शिक्षकों का कर्त्तव्य संतुष्टता का छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान 38.8 एवं प्रमाणिक विचलन 10.2 है। तथा 't' का प्राप्त मूल्य 1.72 है। इस प्रकार गणना से प्राप्त 't' का मान 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' के सारणी मूल्य 1.99 से कम है। अर्थात् अन्तर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना सत्य होती है।

इस प्रकार स्पष्ट है, कि प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों का कर्तव्य सन्तुष्टता का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष –

प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कर्त्तव्य सन्तुष्टता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

- प्राथमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों की कर्तव्य सन्तुष्टता का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।
- प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों का कर्तव्य सन्तुष्टता का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

संदर्भ :

1. कौल लोकेश : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली, 1998.
2. मूज, आर. : 'सोशल इकोलॉजी, मल्टी डाइमेन्सनल स्टडीज ऑफ ह्यूमन्स एण्ड ह्यूमन मिल्यूज इन हैम्बर्ग डी. एण्ड ब्रोडी, के (एडीटर्स) फ्रन्टीयर्स ऑफ साइकोलाजी, वोल्यूम 6, अमेरिकन हैण्डबुक ऑफ साइकियाट्री बेसिक बोर्डस, न्यूयार्क, 1964; पृ.– 355–365.
3. थोर्प, एल.वी. और सैमुलर, ए.एम. : 'पर्सनाल्टी एण्ड इन्टर डिस्सपलीनरी एपरोज' न्यूयार्क : एन ईस्ट–वेस्ट एड., 1965.
4. ओल्पोर्ट, जी.डब्ल्यू : 'व्यक्तित्व' ए साइकोलोजीकल इन्टरप्रिटेशन, न्यूयार्क : हाल्ट, 1937.
5. खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य, अध्यापकीय दर्शिका : परिवेशीय अध्ययन–कक्षा 1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली (भारत), 1987, पृष्ठ 44.